अनर्घराघव में वैदिक सन्दर्भ

डॉ० आरूणेय मिश्र*

मीमांसका के अनुसार प्रत्यक्ष और अनुमान से हम जिस उपाय या ज्ञान को नहीं पा सकते उसे वेद बता सकता है अर्थात् वेद ज्ञान के समस्त उपायो में श्रेष्ठ है। वेद से वह ज्ञान मिलता है जिसे प्राप्त करने क लिए अन्य कोई साधन इस जगत में नहीं।

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तुपायो न विद्यते।

एतं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।

सायण में तैत्तिरीय संहिता के भाष्य की भूमिका में लिखा है -

'इष्टप्राप्त्यनिष्ट परिहारयोर लौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति व वेदः।'

अर्थात् इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट निवारण के लिए अलौकिक उपाय बताने वाला ग्रन्थ वेद है।

काव्य कवि की प्रतिभा और पाण्डित्य दोनों का द्योतक होता है। अनर्घराघव में भी मुरारि के वैदुष्य की झलक स्थान-स्थान पर दिखायी पड़ती है। मुख्य रूप से वेद, वेदांग, राजनीति, दर्शन कामशास्त्र की बातों का विवेचन और उनका समावेश अधिक देखा जा सकता है।

अनर्घराघव में ऐसे अधिकांश स्थल है जहाँ कवि ने वैदिक पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है। उनका प्रयोग उपमादि अलंकारों में भी हुआ है। इससे मुरारि के वैदिक ज्ञान का पता स्पष्ट रूप से चलता है।

यजमान- ऋग्वेद काल से यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला और पुरोहितों द्वारा उसे सम्पन्न करने वाला व्यक्ति यजमान कहा जाता है -

तत् त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस् तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।[1]

चातुर्होत्र[2], सामधेनी ऋचा[3] आदि का भी संकेत मुरारि ने किया है। पुरुष सूक्त में यह उल्लिखित है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की उत्पत्ति क्रम से मुख, बाहु उरु तथा पैर से हुयी है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः।[4]

उरुतदस्ययद्वैश्यंपदाभ्यां शुद्रो अजायत्।।

अनर्घराघव में भी क्षत्रिय जाति की उत्पत्ति ब्रह्मा के बाहुओं से हुयी थी, मुरारि ने संकेत किया है।

त्रेलोक्यत्राण शौण्डः सरसिजवसतेर्य प्रसुतो भुजाभ्याम्।[5]

वैदिक साहित्य में ब्राह्मण के सम्मान का निर्देश है[6], शतपथ ब्राह्मण में उसे भगवान कहा गय है[7], ब्राह्मणों को राज्य की ओर से दण्ड का भी विधान नहीं था[8], राजा सबकी निन्दा कर सकता है, किन्तु ब्राह्मण की नहीं[9]। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार असली हत्या ब्रह्म हत्या ही

*इलाहाबाद

है।[10] अनर्घराघव में परशुराम राम पर क्रुद्ध हैं परन्तु राम उनको ब्राह्मण कह कर, उनके प्रभाव को अतुल बतलाकर प्रणाम करते हैं

''तत्कोपाद्विरम प्रसीद भगवज्जात्यैव पूज्योऽसि नः।।''[11]

गायत्री मंत्र - गायत्रीमंत्र को सकल पापों को विनष्ट करने वाला बतलाया गया है। उसका विधान है कि ब्राह्मण-क्षत्रिय उसका प्रतिदिन जप किया करें। अनर्घराघव में नेपथ्य से परशुराम के लिये यह उक्ति कहीं गयी है -गायत्री तथा द्रुपर्ताद मन्त्र तुम्हारे पापों को नष्ट करें पवमानी ऋचाएँ तुम्हें पवित्र करें, तथा तुम्हारा ब्रहमज्ञान समृद्ध हो।

''गायत्री द्रुपदा देवी पाप्मानपहन्तु ते।[12]

पुनन्तु पावमान्यस्त्वाभृध्नोतु ब्रह्म ते परम्।।''

अथर्ववेद एवं परवर्ती काल में पवित्र अध्ययन से सम्पन्न अध्यात्म ज्ञानी ब्राह्मण को श्रोत्रिय कहा गया है, इसी को लोग वेदज्ञ भी कहते हैं।[13]

अनर्घराघव में भी मुरारि ने अपने को श्रोत्रियपुत्र कहा है।[14]

स्मृतियों में श्रोत्रिय का स्वरूप इस प्रकार बतलाया गया है -

जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्काराद्विजउच्यते।[15]

विधया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय उच्यते।।

यज्ञ-वैदिक धर्म की विशेषता यज्ञ है। ऋग्वेद काल में यज्ञ शब्द यजन, पूजन, या उपासना के सामान्य अर्थ में भी आया है, किन्तु बाद में अग्नि में आहुति देने के साथ अनेक प्रकार की क्रियाओं से युक्त अनुष्ठान को ही यज्ञ समझा जाने लगा। यज्ञों में प्रमुख अश्वमेघ, राजसूय, पुरुषमेघ, दर्शपूर्णमास, अग्निष्टोम आदि हैं। मुरारि ने दशरथ के मुँह से विश्वामित्र को देखकर यह कहलाया है कि 'आज हमारे यज्ञ सफल हुए।'[16] तथा वामदेव नें भी दशरथ को 'याज्ञिक वंश में उत्पन्न कहा है।'[17]

दशतयी-दस मण्डलों में विभक्त होने के कारण ऋग्वेद को ही दशतयी कहा जाता है।[18]

हविष्- देवताओं को दिए जाने वाले यज्ञीय पदार्थ को हविष् कहतें हैं।[19]

स्वाहाकार[20]

अनर्घराघव में मुरारि ने एक श्लोक में दशतयी, हविष तथा स्वाहाकार इन तीनों शब्दों का प्रयोग किया है -

''त्वं तास्ताः स्मृतवानृचो दशतयीस्त्व प्रीतये यज्वभिः।[21]

स्वाहाकारमुपाहितं हविरिह त्रेताग्निरार्चामति।।''

अग्निहोत्र अग्नि को उदिद्ष्ट करके सायं एवं प्रातःकाल किया जाने वाला एक विशेष कर्म है। अग्नि देवतोद्देश्यक प्रवृत्ति के कारण इस कर्म का नाम अग्निहोत्र पड़ा।

अनर्घराघव में अग्निहोत्र का मुरारि ने उल्लेख किया है -

तपः कृशतरैरंगैः स्रष्टभाकारितैरिव।[२२]

सायं प्रातरमी पुण्यमग्निहोत्रं प्रयुंजते।।

अनर्घराघव में कई ऐसे स्थल हैं जहाँ वैदिक नामों का उपमा, अतिशयोक्ति, दृष्टान्तादि अलंकारो के लिए प्रयोग किया गया है जिससे यह ज्ञात होता है कि कवि को इनकी स्वरूप प्रक्रिया आदि का ज्ञान अवश्य रहा होगा। कुछ उदाहरण इस प्रकार है -

(१) *एताभिस्तव कौतुकोक्तिाभिरपि त्रैविद्यमूर्तेरिव।*[२३]

त्वष्टस्यामराशिल्पिना दिनकृतोऽवच्छेदवेदाक्षरै।।

यह वेदत्रयमूर्तिधारी सूर्य के विश्वकर्मा द्वारा खण्डित होने पर उनके अंशभूत वेदाक्षरों के समान है।

(२) जनक विश्वामित्र की प्रशंसा करते हुए कहते हैं - सामवेद के रहस्य के समान, अभ्यन्तर तथा वाहयमलों को दूर करने वाले ऋग्वेद के सम्भाषण के समान, यजुर्वेद के मूलधन के समान यह आपका आशिर्वाद मेरी कन्या के वर को सम्मुख की तरह प्रदर्शित कर रहा है।

समस्या वा साम्नांवहिरर्वाहरंहः परिमृजा -[२४]

मृचां वा संवादः किमपि यजुषां वा परिपणः।।

(३) शौष्कक मिथिला में आकर राम लक्ष्मण को देखते ही कहता है -

पार्श्वे त्रयाणामेंतेषामृक्सामयजुषामिव।[२५]

रूपाभ्यांविधिमन्त्राभ्यामथर्वैव प्रदीप्यते।।

यह दोनों कुमार ऋक् साम यथा यजु के समान तीनों ऋषियों के बगल में विधि-मंत्र रूप दो भागों में विभक्त अथर्ववेद की तरह प्रदीप्त हो रहें हैं।

(४) इहलोक तथा परलोक में कल्याण करने वाली वेदत्रयोक्त वाणी को खिल स्वरूप वाहय तथा आभ्यन्तर मल को दूर करनें वाले ब्राहमणों के वचन कब विपरीत होतें हैं।[२६]

समय सूचक जैसे मध्याहन एवं सांय के लिए वैदिक शब्दों का ही प्रयोग मुरारि ने किया है।

सन्त्रसंस्कारसम्पन्नास्तन्वदौदन्वतीरपः।[२७]

एतत्त्रयीमयं ज्योतिरादित्यारव्यं निमज्जति।।

इस प्रकार हम कह सकते है कि मुरारि को वेद का पूर्व ज्ञान था। इसका उन्होंने उल्लेख किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

१. ऋग्वेद १/२४/११

२. अ.रा० ३/२०

३. अ०रा० ३/३३

४. पुरूषसूक्त

५. अ०रा० ४/३७

६. काठक संहिता २५/३

७. शतपथ १४/६१/२

८. शतपथ १३/५/४/२६

९. शतपथ ५/४/२/३

१०. शतपथ १३/३/५/३

११. अ०रा० ४/३५

१२. अ०रा० ४/६२

१३. अथर्ववेद ६/३/३७, १०/२/२०

१४. अनर्घराघव - पृष्ठ २१

१५. मनुस्मृति

१६. अ०रा० १/१८

१७. अ०रा० १/२०

१८. निरूक्त ७/८, ७/२०, ११/१६, १२/४०

१९. ऋग्वेद १/२४, ११

२०. शतपथ ब्राह्मण २/२/४/६, १/५/४/५

२१. अ०रा० १/५३

२२. अ०रा० २/१६

२३. अ०रा० १/३४

२४. अ०रा० ३/८

२५. अ०रा० ३/३५

२६. अ०रा० ३/१६

२७. अ०रा० २/४६

******